रिकॉर्ड:- जो पिया के साथ है... ओम शान्ति प्रातः क्लास 6-6-67

जो ज्ञान सागर के साथ है उनके लिये यह ज्ञान की बरसात है। है ज्ञान। उनको फिर बरसात भी कह देते है। तुम बाप के साथ हो नां। भल विलायत मे हो वा कहा भी हो याद तो रखते ही हो नां। जो भी बच्चे याद मे रहते है वो सदेव साथ ही है। याद मे रहने से साथ रहते है और विकर्म विनाश होते है। फिर होता है विकर्माजीत का सम्वत। फिर बाद मे जब रावण राज्य होता है तब कहते है विकर्माजीत का सम्वत। वो विकर्माजीत। वो विकर्मी। अभी विकर्माजीत बन रहे हो। फिर विकर्मी बन जावेंगें। इस समय सभी अति विकर्मी है। किसीको भी अपने धर्म का पता नही है। आज बाबा एक छोटा सा प्रश्न पुछते है। सतयुग मे देवताये यह जानते है कि हम आदी सनातन देवी देवता धर्म के है? जैसे तुम समझते थे कि हम हिन्दु धर्म के है। कोई कहेंगें हम क्रिश्चन धर्म के है। वैसे वहाँ देवता अपने को देवी देवता धर्म का समझते है? विचार की बात है नां? वहाँ दुसरा कोई धर्म तो है नही। जो समझते है कि हम फलाने धर्म के है। यहाँ पर बहुत धर्म है तो पहचान देने लिये अलग-2 नाम रख दिये है। उनको पता भी नही रहता है कि कोई धर्म होता है। उनकी ही राजाई है। अब तुम जानते हो कि हम तो आदी सनातन... के है। देवी देवता और कोई को कहा नही जा सकता। पतित होने कारण अपने को देवता कहला नही सकते। पवित्र को को ही देवता कहा जाता है। वहाँ ऐसी कोई बात होती नही। कोई से भेंट की जा सकती है। अब तुम संगम पर हो जानते हो कि आदी सनातन देवी देवता धर्म स्थापन हो रहा है। वहाँ तो धर्म की बात ह नही। है ही एक धर्म। बच्चो को यह भी समझाया है कि वो खुद कहते है कि महाप्रलय होगी। अर्थात कुछ भी नही रहता है। यह भी रांग हो जाता है। बाप बैठ समझाते है कि ~~[illegible]~~ राइट क्या है। शास्त्रो मे जलमई दिखा दिया है। बाप बैठ समझाते है कि सिवाय भारत के बाकी सब जलमई हो जाता है। इतनी सृष्टी क्या करेंगें? एक भारत ही मे देखो तो कितने गांव है। पहले जंगल होता है फिर उनसे वृधी होती जाती है। वहां तो सिर्फ तुम आदि सनातन देवी देवता धर्म के ही रहते है। यह तुम ब्राह्मणो ~~की~~ बुधी मे बाबा धारना करवा रहे है। दुनियां तो सारि ही कुछ नही जानती है। इसलिये ही कहा जाता है तुच्छ बुधी। अब तुम जानते हो कि उंच ते उंच शिव बाबा कौन, उनकी पुजा क्यो की जाती है? अक आदि के फूल क्यो पढ़ाते है। वो तो निराकार है नां। कहते है नाम रुप से न्यारा है। परन्तु नाम रुप से न्यारी तो कोई चीज होती नही। तब क्या है जिनको फूल आद चढ़ाते है। पहले-2 पुजा उनकी होती है। मन्दिर भी उनके बनते है। क्योकि भारत की सारी दुनियां की और बच्चो की सर्विस करते है। मनुष्यों की ही सर्विस की जाती है नां। इस समय तुम अपने को देवी देवता धर्म के नही कहला सकते हो। तुमको पता भी नही था कि हम सो देवी देवता धर्म के थे और अब आकर क्या बने है? अब बाप समझाते रहते है तो समझना चाहिये नां। यह नालेज सिवाय बाप के और कोई दे नही सकते है। उनको ही कहते है ज्ञान का सागर नालेज फुल' गाया भी हुआ है रचता और रचना को रिषी मुनी आद भी नही जानते है। नेति-2 करते गये है। हम नही जानते है। यह सच्च कहते थे। रचता को ही नही जानते है तो कुछ भी नालेज नही। जैसे छोटे बच्चे को नालेज होती है क्या? जैसे-2 बडा होता जावेगा बुधी खुलती जावेगी। बुधी मे आता जावेगा कि विलायत कहां है यह कहां है। तुम बच्चे भी पहले इस बेहद की नालेज को कोई भी कुछ भी नही जानते थे। यह भी जानते है कि भल हम शास्त्र आद पढ़ते है परन्त जानते कुछ भी नही है। जैसे तुच्छबुधी थे। वो नही जानते थे। मनुष्य ही इस ड्रामा के एक्टर्स है नां। खेल भी सारा तुम्हारे पर ही बना हुआ है। भारत ही की हार और भारत की ही जीत। भारत मे सतयुग आदि मे देवता धर्म था। पवित्र धर्म था। अपवित्रता के कारण अपने को देवता बना नही सकते। फिर भी श्री-2 नाम रखवा दिया है। श्रीमति फलानी। अब श्री का अर्थ कुछ भी नही समझते है। श्री माना ही श्रेष्ट। श्रेष्ट कहा जाता है देवताओं की दुनियां को। श्रीमत भगवानोवाच्य कहा ~~[illegible]~~ जाता है नां। अब श्री कौन (ठहरे??)?

जो बाप से सम्मुरव सुन कर श्री बनते है। यां जिन्होने अपने को श्री कहलाया है। अपने को डबल सिरताज बना दिया है। कितने बड़े-2 नाम अपने को देते है। बाप के कर्तव्यो पर जो जो नाम है वो सब अपने पर रववा लिये है। यह सब है रेजगी बाते। फिर भी बाप कहते है कि बच्चे एक बाप को याद करते रहो। यही वशीकरण मन्त्र है। तुम रावण पर जीत पहन कर जगत जीत बनते हो। बार-2 अपने को आत्मा समझो। यह शरीर तो यहां पांच तत्वो का बना हुआ है। छूटना है। फिर बनता है। आज कल तो गर्भ मे प्रवेश कर फिर अन्दर मे ही रवत्म हो जाते है ऐसे-2 केस भी होते रहते है। अब आत्मा तो अविनाशी है। अविनाशी आत्मा को अब अविनाशी बाप पढा रहे है। संगम युग पर। बस कहते है कि कुछ भी करो भल कितने भी विघन आद पड़ते है, माया के तूफान आते है। तुम बाप ही की याद मे रहो। तुम सब समझते हो कि हम ही सतोप्रधान थे अब तमोप्रधान मे आये है। तुम्हारे मे भी नम्बरवार जानते है। तुम बच्चो की बुधी मे है कि हमने ही पहले-2 भक्ति की थी। जरुर जिसने पहले-2भक्ति की है उसने ही शिव का मन्दिर बनाया। क्योकि धनवान भी तो वो ह होते है नां। बडे राजा को देरव कर ओर भर राजोय प्रजा भी करेगी। यह सब है डिटेल की बाते। एक सैकिंडमे जीवन मुक्ति भी कहा जाता है फिर कितने साल लग जाते है समझाने मे। ज्ञान तो सहज ही है उसमे इतना टाईम नही लगता है। जितना याद की यात्रा पर लगता है। पुकारते भी है कि बाबा हमको पतित से आकर पावन बनाओं। ऐसे नही कहते है कि बाबा हमे विश्व का मालिक बनाओं। सब कहेंगे पतित से पावन बनाओ। पावन दुनियां कहा जाता है सतयुग को। इसको पतित दुनियां कहेंगें। अपने को पतित समझते नही है पतित दुनियां कहते हुये भी। अपने से नफरत भी नही रवते है। परन्तु बाप कहते है कि प्रीति तो है नां। तुम किसीके हाथ का नही रवाते हो तो कहते है कि हम भंगी है क्या? ओर तुम तो रवुद ही कहते हो नां।पतित तो सभी है नां। तुम कहते भी हो हम पतित है। यह देवताये पावनहै। तो प्रीति को क्या कहेंगें? गायन भी है नां अमृत छोड कर विरव काहे को रवावे? विरव तो रवराब है नां। बाप कहते है यह विरव तुमको आदि मध्ये अन्त तक दुःरव देता है। परन्तु उनको पुआईजन समझते थोडेही है। जैसें अमली अमल बिगर रह नही सकते। शराब की आदत वाले शराब बिगर रह नही सकते है। बाबा ने ऐसे-2 शराबी भी देरवे है कि 8-10 बोतल रोज का पीना कामन है। उन की रोम-महिफ्ल लगी पडी है। लडाई का समय होता है तो उनको शराब पिला कर नशा चढा कर भेज देते है। नशा मिला बस। समझेंगें हमको ऐसा करना है। उन लोगो को मरने का डर नही रहता। कहीं भी बाम्बस ले जा कर बाम्बस सहित ही गिरते है। गायन भी है कि मूसलो की लडाई लगी। राईट बात अभी तुम प्रेक्टीकल मे देरव रहे हो। आगे तो सिर्फ पढ़ते ही थे कि पेट से मूसल निकले फिर यह हुआ। अभी तुम समझते हो कि पाण्डव कौन है कौरव कौन है। पाण्डव जीते जी मरने के लिये, पुरानी जुत्ती छोड़ने के लिये पुरुषार्थ कर रहे है। कहते है नां पुरानी जुत्ती छोड कर फिर नई लेनी है। बाप भी कहते है कि हमने यह पुरानी जुत्ती ली है। बच्चो को ही समझाते है। तुम बच्चे ह यह समझते हो कि बाप बिना तो यह नालेज कोई सिरवा ही नही सकते। बापकहते है कि मै कल्प-2 आता हूं। मेरा नाम है शिव । शिव जयन्ति भी मनाते है। भक्ति मार्ग के लिये कितने मन्दिर आद बनाते है। दिन प्रति दिन वृधी को ही पाते जाते है। पुजा के लिये तो बहुत मन्दिर बनाने पडे नां। इसलिये नाम भी बहुत रव दिये है। इस समय तुम्हारी पुजा हो रही है। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो कि जिनकी हम पुजा करते है वो ही हमको पढा रहे है।जिन लक्ष्मी-नारायण की हम पुजा करते थे वो ही हम बन रहे है। यह ज्ञान बुधी मे है। स्मरण करते हो। फिर ओरो को भी सुनाना है। बहुत है जो धारन नही कर सकते है। बाबा कहते है जास्ती धारणा नही कर सकते हो तो हर्जा नही है। याद की तो धारना है नां। बाप को ही याद करते रहो। जिनकी मुरली नहीं चलती है तो यहाँ पर बैठ कर स्मरण करे। यहाँ तो कोई बन्धन झंझट आद है नहीं। घर मे बाल-बच्चो आद का वो वातावरण देरव कर वो नशा गुम हो जाता है। बहुत सहज है जिनको

किनको भी समझाना। वो लोग तो गीता आद पुरी कण्ठ कर लेते है। सिख लोगो को भी ग्रंथ कण्ठ रहते है। तुमको क्या कण्ठ करना है? बाप को। बाप को कण्ठ तो जनावर भी करेंगें। तुम कहते भी हो बाबा। यह है बिलकुल नई चीज। यही एक समय है जबकि आपको अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। 5000 वर्ष पहले भी सिखाया था। ओर कोई की ताकत नही जो कि ऐसे समझा सके। कह नही सकते। ज्ञान सागर है ही एक बाप। दुसरा कोई हो नां सके। ज्ञान सागर बाप ही तुमको समझाते है। आजकल तो ऐसे भी बहुत निकले है जो कहते है कि हम ही अवतार उतरे है। भगवान ने मैरे मे प्रवेश किया है। है सब झूठा। झूठे भगवान, आद कहलाने वाले बहुत हो गये है। इसलिये ही सच्च की स्थापना मे विघन पड़ते है। परन्तु गाया गया है कि सच्च की वेडी डोले डूबे नही। दुनियां में तो बहुत झूठ है। विष्णु नाम दुःख हरता नाम भी अपने उपर रख लेते है। मद्रास की तरफ तो बहुत नाम ऐसे है। भक्तवतसल्य। कोई-2 तो डवल नाम भी रखते है। ल-न, राधा कृष्ण। दोनो इकठे नाम भी बहुतेरे के है। वास्तव मे राधा अलग है। कृष्ण अलग है। यह तो सब बाते बाप वैठ सुनाते है। ओर बाप से पुरा वर्सा पाने लिये बच्चो को युक्ति भी समझाते है। अब तुम बाप के पास आते हो तो तुम्हारे दिल मे खुशी रहनी चाहिये। आगे यात्रा पर जाते थे तो दिल मे क्या आता था। अब परिवार छोड कर यहां आते हो तो दिल मे क्या आता है कि हम बाप दादा के पास जाते है। बाप ने यह सब समझाया है कि मुझे सिर्फ शिव बाबा कहते है। जिसमे मैंने प्रवेश किया है वो है ब्रह्मा। बादरियां होती है नां। पहले-2 बादरी ब्राह्मणो की की फिर देवताओ की। तुम्हारी चार बादरियां हो जाती है। जब ज्ञान नही था तो शुद्र वर्ण के थे। तुम विचार करेंगें तो इसके पहले हम शुद्र थे। उसके आगे वैश्य थे। तो हमारा हो गया ग्रेट-ग्रेट-ग्रेट ग्रेड फादर। ग्रेट शुद्र, ग्रेट वैश्य ग्रेट क्षत्री, उसके पहले ग्रेट ब्राह्मण थे। अब यह ज्ञान सिवाय बाप के ओर कोई समझा नही सकते। दुर देश मे रहने वाला बाप आकर दूर देश का सारा ज्ञान बच्चो को देते है। तुम समझते हो कि हमारा बाबा दूर देश से इसमे आते है। यह पराया देश पराया राज्य है। शिव बाबा को अपना शरीर है नही। ओर वो है ज्ञान का सागर। स्वर्ग का राज्य भी उन्ही को देना है। कृष्ण थोडेई देंगें। शिव बाबा ही देंगें। कृष्ण को कब बाबा नही कहेंगें। बाप ही राज्य देते है। बाप से ही वर्सा मिलता है। अब हद के सब वर्से पुरे होते है। सतुयग मे तुमको यह मालुम नही रहता है कि हमने यह 21 जन्मों का वर्सा लिया हुआ है। अभी ही यह जानते हो कि हम 21 जन्मों का वर्सा आधा कल्प के लिये ले रहे है। 21 पीढी माना पुरी पीढी। जब समय पुरा होगा तब समय पर शरीर जैसे सर्प पुरानी खल छोड कर नई लेते है नां। हमारा भी पांट बजाते-2 यह चोला पुराना हो गया है। सन्यासी लोग तो सिर्फ मिसाल ही देते है। समझते समझाते कुछ भी नही है। जो सुनावेंगें कहेंगें हां सत्य। पवन से हनुमान पैदा हुआ सत्य। कितनी बाते बना दी है। वास्तव मे भ्रमरी का मिसाल भी अब का ही है। सच्चे-2 ब्राह्मण तुम हो। तुमको कहा जाता है कीडो को आप समान दन ओ। इन्हे कीडे को ले आकर वेठा कर भुन-2 करो। भ्रमरी भी भुन-2 करती है। फिर कोईमे तो पर आ जाते है कोई सड जाते है। मिसाल सब अभी के ही है। अभी बनारस मे बहुत अच्छा सेन्टर खोल रहे है। बाबा को वहां के लिये बहुत अच्छे बच्चे चाहिये। वहां बहुत विदवान पण्डित आद से सामना करना होगा। शास्त्रीय करते है नां। दुसरे कोई का शास्त्रीय हो नही सकता है। सिवाय तुम्हारी गीता। गीता ही मुख्य है। वो लोग वेद-2 कीते रहते है। वास्तव मे सब शास्त्र मई शिरोमणी भगवद्‌ गीता गाई हुई है। इससे पुराना शास्त्र कोई हो नही सकता। तो वहां जाकर पण्डितो आद से बहुत पकडना है। बहुत झूठे-2 टाईटल दे दिये है। अभी वहां पर सेन्टर खोले रहे है। फिर वहां से सबको निमन्त्रण दिया जावेगा। गोया इस समय दुशमनो को निमन्त्रण दिया जाता है। इन गुरुओं आद का भी मुझे आकर उदार करना है। तो वो गुरु लोग फिर और कोई का उदार कैसे करेंगें। बच्चो को नूर रत्न कहा जाता है। बाप भी तुमको कहते है मैरे नूर रत्न! तुमको अपना बनाया है तो तुम मेरे हमारे हुये नां। ऐसे बाप को जितना याद करेंगें पाप कट जावेंगें। ओर कोई को भी याद करने से पाप नही कटते।